विस्तार कार्ड संख्या: 54 (2014)

उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्रों में गेहूँ के पीले रतुए का प्रबंधन

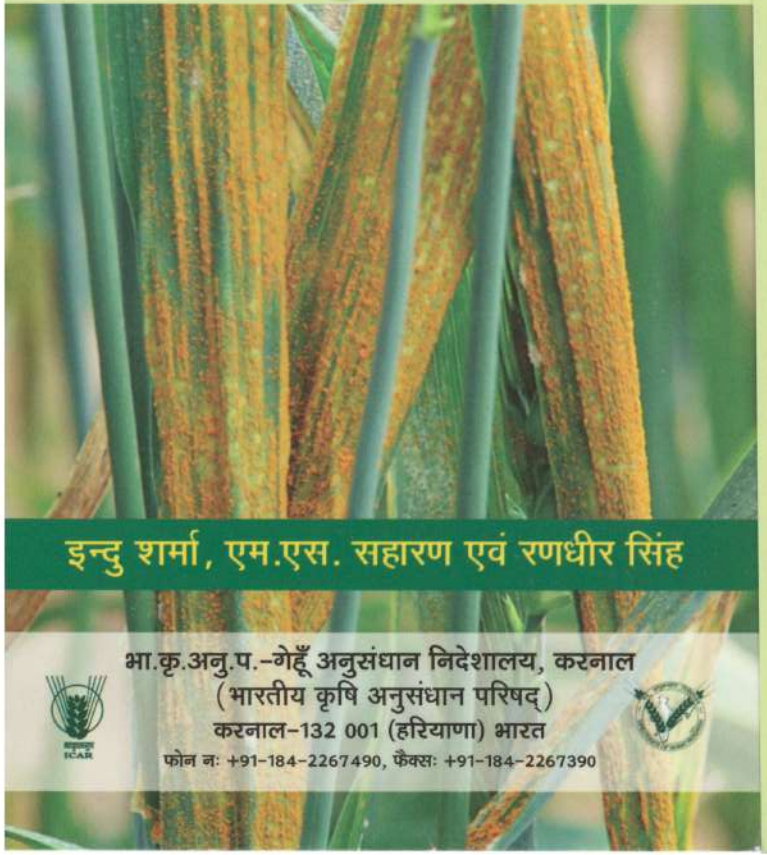

इन्दु शर्मा, एम.एस. सहारण एवं रणधीर सिंह

भा.कृ.अनु.प.-गेहूँ अनुसंधान निदेशालय, करनाल
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्)
करनाल-132 001 (हरियाणा) भारत
फोन नः +91-184-2267490, फैक्सः +91-184-2267390

पीला रतुआ के लक्षण

★ जनवरी के अन्त में या फरवरी के आरंभ में पत्तियों पर पीला पाउडर दिखाई देने लग जाता है।

पीला रतुआ की रोकथाम कैसे करें?

★ क्षेत्र में अनुमोदित प्रजातियां ही उगायें तथा दूसरे क्षेत्रों के लिये अनुमोदित प्रजातियां न उगायें।

मुख्य उन्नत प्रजातियाँ

समय से बिजाई: डी.बी.डब्ल्यू. 88, एच.डी. 3086, डब्ल्यू.एच. 1105, एच.डी. 2967, डी.पी.डब्ल्यू. 621-50, डब्ल्यू.एच. 542, पी.डी. डब्ल्यू. 314 (ड्यूरम) एवं डब्ल्यू.एच.डी. 943 (ड्यूरम)

देर से बिजाई: डी.बी. डब्ल्यू. 90, डब्ल्यू.एच. 1124, डी.बी.डब्ल्यू. 71, एच.डी. 3059, पी.बी.डब्ल्यू. 590, डब्ल्यू.एच. 1021 एवं डी.बी.डब्ल्यू. 16

समय से बिजाई (असिंचित/वर्षा आधारित): पी.बी.डब्ल्यू. 644, डब्ल्यू.एच. 1080, एच.डी. 3043 एवं पी.बी.डब्ल्यू. 396

नियंत्रण

★ उपरोक्त प्रजातियों की बुआई समय पर करें।

★ खेतों का निरीक्षण शुरु से ही बड़े ध्यान से करें, विशेषकर वृक्षों के आस-पास या पॉपलर वृक्षों के बीच उगाई गई फसल पर अधिक ध्यान दें।

★ फसल पर पीला रतुआ के लक्षण दिखने पर नजदीक के कृषि विशेषज्ञ से सम्पर्क करें।

★ फसल पर इस रोग के लक्षण दिखने पर सही दवाई की उचित मात्रा का छिड़काव करें। यह स्थिति प्रायः जनवरी के अन्त में या फरवरी के आरंभ में आती है, परन्तु रोग इससे पहले दिखाई दे तो दवाई का एक छिड़काव कर दें।

★ छिड़काव के लिये प्रॉपीकोनेजोल 25 ई.सी. (टिल्ट) या टैबूकोनेजोल 250 ई.सी. (फोलिकर) या ट्राईडिमिफोन 25 डब्ल्यू पी (बेलिटॉन) का 0.1 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव करें। एक एकड़ खेत के लिए 200 मि.ली. दवा 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। फसल की छोटी अवस्था में पानी की मात्रा 100-120 लीटर प्रति एकड़ रखी जा सकती है।

★ रोग के प्रकोप तथा फैलाव को देखते हुए दूसरा छिड़काव 15-20 दिन के अंतराल पर करें।